International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 14
November 2017

भक्त फूलसिंहः– सामाजिक योगदान व बलिदान

Ravita Rani
Research Scholar (History)
NIILM University, Kaithal
Haryana, India
Email: ravitarani98@gmail.com

सारांश

इसमें भक्त फूल सिंह व उनके सामाजिक कार्यों के बारे में अध्ययन किया गया है। उस समय व्यवस्थाओं का अभाव होता था लेकिन भक्त फूल सिंह ने परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानी। उन्होनें सामाजिक कार्यों, आर्य समाज को, वैदिक पद्धति को व गौ रक्षा को सात्विकता से अपनाया था। नारी शिक्षा व सशक्तीकरण के तो वो प्रकाश पुंज थे। उनके द्वारा तीन छात्राओं से शुरू किया गया कन्या गुरूकुल आज सरकारी विश्वविद्यालय के रूप में कार्यान्वित है। जिसमें हजारों छात्राएं भारतवर्ष के कोने–2 से अध्ययनार्थ हैं। कितनी औरतें नौकरी करके अपने घर परिवार व आस–पास के लोगों को सशक्त बना रही है।

भक्त फूल सिंह का पूरा जीवन प्रेरणात्मक रहा है। हर असंभव प्रयास को अभावों में भी संभव बनाया जा सकता है। बस भक्त फूल सिंह की तरह कर्मठता, निष्ठा, लगाव व उत्साहिता होनी चाहिए। भक्त जी ने अपना पूरा जीवन सामाजिक कार्यों में समर्पित कर दिया व अन्त में 14 अगस्त 1942 को चार–पांच यवनों द्वार शहीद कर दिए गए।

प्रस्तावना

हरियाणा की पावन धरती बड़े ही आदर के योग्य रही है। इसी हरियाणा की धरती कुरूक्षेत्र में हुआ महाभारत का धर्म युद्ध। इसी धरती पर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। जिसका ज्ञान देश व विदेशों को आलोकित करता है। यही नहीं हरियाणा की धरती वीरों की गाथाओं से प्रसिद्ध है। ऋषि मुनियों की भूमि भी रही है। ऋषि मुनियों की मूर्तियों, गुरूद्वारे, मन्दिर व गीता का ज्ञान आज भी हमें जीवन ज्ञान व प्रेरणा देते हैं। अनेक दीप इस पावन धरती पर जलते हैं और जलते ही रहेगें। उन दीपों में उल्लेखनीय नाम है भक्त फूल सिंह और उनकी सुपुत्री पदम श्री सुभाषिणी। इन्होनें अपने ढंग से देश का सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक इतिहास बनाया है। भक्त फूल सिंह ने यथासंभव समाज के लिए अनेक कार्य किए। लोगों के लिए कूएं खुदवाना, झगड़े निपटाना, लड़के व लड़कियों को शिक्षा के लिए गुरूकुल खोलना आदि। 19वीं व 20वीं शताब्दी का काल तो सामाजिक बुराईयों के लिए संक्रमण का काल रहा है। जिसकी झलक आज तक भी दिखाई देती है। भक्त फूल सिंह चहुं ओर से समाज के लिए कार्यरत रहे। इस शोध पत्र में भक्त फूल सिंह के जीवन, उनके सामाजिक योगदान व बलिदान की अन्वेषण पर विचार करेगें।

साहित्य सर्वेक्षण

विद्यामार्तण्ड बी. (1996) का श्री भक्त फूल सिंह के जीवन चरित्र में उद्धेश्य था कि आर्य समाज ने उनके जीवन को परिवर्तित कर दिया। उन्होनें अनेक बुराईयों (मांस खाना, शराब व रिश्वत लेना) आदि को छोड़कर अपने जीवन को समाज के कार्यों में लगा दिया। गुरूकुल भैंसवाल कलां व कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की स्थापना की

जो उस समय नारी शिक्षा के लिए तो बहुत बड़ा योगदान था। इसी तरह के विचार **मलिक एस (2006)** का देहाती गांधी भक्त फूल सिंह जीवन चरित्र में प्रस्तुत किए हैं। अनेक बुराईयों को छोड़कर भक्त फूल सिंह सामाजिक कार्यों में कूद गए थे। उन्होनें कहा है कि भक्त जी ने नारी शिक्षा, गुरूकुल संस्थाओं, समाज व राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

सिंह आर (1995) का स्वामी नित्यानन्द भजनमाला का उद्धेश्य था कि लोग अपने जीवन को सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर लगा दें। ये भजनोपदेशक समाज के लोगों को भजनों के माध्यम से उत्साहित करते थे और समाज को सशक्त बनाने में कार्य करते थे।

शास्त्री वी व सिंह आर (2005) का कर्मयोगी चौ. प्रियव्रत अभिनन्दन ग्रंथ का उद्धेश्य हरियाणा में हुए सपूतों के बारे में बताना व उनके जैसी कर्मठता से काम करने के लिए प्रेरित करता है।

शकुन्तला एस व ज्ञानवती एस (1992) का अभिनन्दन ग्रंथ में उद्धेश्य था कि कैसे भक्त फूल सिंह व उनकी पुत्री ने राष्ट्रीयता की भावना से अतिप्रोत होकर महिला गुरूकुल व भैंसवाल गुरूकुल आरम्भ किए। कैसे शिक्षा परंपरा में आर्य समाज में योगदान दिया। भक्त जी के शहीद हो जाने के बाद सुभाषिनी बहन जी ने उनके अधूरे कार्यों को पूरा किया। समाज को ही नहीं अपितु नारी को भी सशक्त बनाया।

अध्ययन के उद्धेश्य

1. भक्त फूल सिंह के सामाजिक योगदान व बलिदान का विश्लेषण करना।
2. भक्त फूल सिंह व सामाजिक स्थिति के बारे में बतलाना।

शोध प्रणाली

इसमें द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग हुआ है। भक्त फूल सिंह के बाल्यकाल से मृत्यु पर्यंत (1885 से 1942 ई.) तक के काल का अध्ययन करूंगी।

नमूना प्रारूप

शोध क्षेत्र को देखते हुए मैंने सहुलियत प्रतिचयन व नियतांश प्रतिचयन का प्रयोग किया है।

आंकड़े विश्लेषण

साहित्य सर्वेक्षण पद्धति व ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रयोग किया है।

विवरण

भक्त फूल सिंह अपने समय के एक महान समाज सुधारक, शैक्षणिक व सामाजिक कार्य करने वाले नायक थे। वे सामाजिक नायक होने के साथ–2 तपस्वी, त्यागी खानपुर कलां गुरूकुल व भैंसवाल गुरूकुल के संस्थापक, आम लोगों व किसानों के हमदर्द व नारी उत्थान के लिए काम करने वाले थे। आर्य समाज के संपर्क में आने के बाद उन्होनें खुद को बहुत बुलंद कर लिया था। उन्होनें हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया, आर्य समाज व शुद्धि आन्दोलन के प्रमुख थे। दलितोद्वार के लिए अनशन किया। सामाजिक स्तर पर वे चमकता हुआ सितारा थे।

जीवन परिचय

भक्त फूल सिंह का जन्म 24 फरवरी 1885 ई. में हरियाणा के सोनीपत जिले के माहरा (जुआँ के पास) गांव में हुआ था। इनके बचपन का नाम हरफूल था। इनके पिता का नाम बाबर व माता का नाम तारा देवी था। 8

वर्ष की आयु में इनको स्कूल भेजा गया। प्रथम से चौथी कक्षा इन्होनें गांव जुआं से, पांचवीं से सातवीं कक्षा महरौली से उत्तीर्ण की थी। आठवीं कक्षा इन्होनें खरखौदा से पास की यहीं इनका नाम हरफूल से फूलसिंह हो गया था।

आठवीं उत्तीर्ण करने के बाद इन्होनें खलीला से पटवारी की एक वर्ष तैयारी की। पानीपत से परीक्षा देकर अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। 1904 में इन्होनें सींख पाथरी गांव में बतौर पटवारी नियुक्ति मिली। 1905 में इनका विवाह नाहरी गांव में 20 वर्ष की आयु में लक्ष्मी देवी खरब से कर दिया गया था। 1914 में ये सुभाषिणी नामक पुत्री के पिता बने। पुत्री जन्म के अढाई वर्ष बाद ही इनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। 1917 में इनके भाई के देहवासन के बाद इनका पुनर्विवाह उनकी पत्नी धूपकौर के साथ कर दिया गया। सन् 1918 में ये एक पुत्री गुणवती के पिता बन गए।

जीवन परिवर्तन

सन् 1907 में ये प्रीत सिंह पटवारी के साथ आर्य समाज के सत्संग में गए। सत्संग में इन्होनें विद्वानों व महात्माओं के उपदेश व प्रवचन सुने। यहीं से इनके जीवन में परिवर्तन हुआ। 1910 में पानीपत के आर्य समाज उत्सव में स्वामी ब्रह्मानन्द ने यज्ञोपवीत (जनेऊ) प्रदान कर दिया था।

बुराईयों का त्याग

मांसाहार का त्याग

उरलाना में रहते हुए ये कुछ मुसलमानों की संगत के कारण मांसाहार करने लग गए थे। आर्य समाज और अपने मांसाहार के बारे में अपने साथियों को बताया और उनके सामने मांसाहार त्याग की प्रतिज्ञा ली। इस प्रकार उन्होनें मांस भक्षण का परित्याग किया।

रिश्वत का त्याग

भक्त फूल सिंह पटवारी के पद के साथ–2 सामाजिक कार्य भी करते थे। साथ में आर्य समाज के साथ गुढ़ता से जुड़ चुके थे। इन्होनें रिश्वत में 5000 रूपये मिले थे। ख्यालीराम नम्बरदार ने रिश्वत में मिले अपने हिस्से को लेने से मना कर दिया। अतः 1914 में इसी घटना से इनके मन में भी रिश्वत परित्याग का ख्याल आया। अपने हिस्से की जमीन सूण्डूराम के पास गिरवी रखकर रिश्वत के 5000 रूपये इन्होनें लोगों के घर–2 जाकर वापस लौटा दिए थे। अपने साथियों के सामने रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा की और इस बुराई का परित्याग भी कर दिया था।

भक्त फूल सिंह जीवन चरित्र पृष्ठ 78, 86

सामाजिक कार्य

कात गांव के लोगों की मदद

एक बार थानेदार के कात गांव के लोगों से 800 रू ले लिए थे। लोगों ने भक्त फूल सिंह को बताया कि थानेदार लोगों को डरा धमाकाकर 800 रू. ले गया तो भक्त फूल सिंह ने तुरंत थानेदार से ये पैसे वापस दिलवाए।

कासंडा गांव के लोगों की मदद

एक मुसलमान गायक कासंडी गांव में लड़कियों व औरतों के सामने गंदी रागनियां गाता था। लोगों ने उसकी पिटाई कर दी। मुसलमान गायक ने 150रू थानेदार को देकर झूठी रिपोर्ट लिखवा दी कि कासंडा के लोगों ने उसे मारा व उसकी अंगूठी व साइकिल छीन ली। भक्त फूल सिंह को इस बात का पता लगा तो वो कासंडा गांव गए। लोगों को समझाया कि उन्होनें ठीक किया है। भक्त फूल सिंह ने उजाला पहलवान व दो तीन आदमियों

को थाने भेजकर थानेदार से रिश्वत वापस मंगवाई। इस पर थानेदार ने कहा कि– ''पहलवान मैं तो रिश्वत नहीं लेना चाहता था। भक्त फूल सिंह को मेरा सलाम देना और कहना कि मैं उनका बेटा हूं, उनकी सारी बात मानता हूं।''

मनाना गांव के झगड़े का निपटारा

मनाना गांव में दो परिवारों में आपसी झगड़ा था। दोनों गुटों को समझाया गया लेकिन वे नहीं माने। अतः भक्त जी ने उपवास शुरू कर दिया, तीन दिन के उपवास के बाद उन गुटों की सुलह करवा दी।

15 अगस्त 1916 को समालख (पानीपत) में बूचड़खाने की नींव रखी जानी थी। पटटी कलियाण गांव के निवासी टोडरमल भक्त फूल सिंह के पास आए और बताया कि समालखा में गौहत्था खुलने जा रहा है। भक्त फूल सिंह ने टोडरमल को आश्वासन दिया कि वहां गौहत्था नहीं खुलेगा।

समालखा में लोग निश्चित स्थान पर पहुंच गए। बूचड़खाने का विरोध किया। भक्त फूल सिंह, पीरू सिंह व स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ने साथ मिलकर काम किया। बरकत अली पटवारी व अब्दूल हक नामक गिरदावर के साथ मिलकर एक रिपोर्ट तैयार की गई जिसमें भक्त फूल सिंह का विप्लव का मुखिया मुसलमानों को खत्म करने वाला व ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलट करने वाला व बागी घोषित किया जाए, तथा बन्दी बनाया जाए। इन आरोपों में भक्त फूल सिंह, चौ. लहरी सिंह, चौ. बख्शीराम, चौ. गोकुल नम्बरदार, चौ. टोडरमल, चौ. मोहर सिंह, पं. चन्द्रभान व सुरजभान को बन्दी बनाया गया था। सबको पांच–2 हजार की जमानत कराकर छुडाया गया। सबने भक्त फूल सिंह का मुकदम लड़ने से इन्कार कर दिया। अन्त में चौ. छोटूराम ने भक्त फूल सिंह के मुकदमे की पैरवी की व भक्त फूल सिंह व उनके साथियों को बाइज्जत बरी करवाया। चौ. छोटूराम ने इस मुकदमे की कोई फीस नहीं ली।

देहाती गांधी भक्त फूल सिंह जीवनवृत्तः शिवानन्द मलिक पृष्ठ 48 से 56

नौकरी से त्यागपत्र

भक्त जी नौकरी के साथ सामाजिक कार्यों को कम समय दे पाते थे। उन्होनें समाज सुधार को अग्रिण श्रेणी में रखा था। उन पर सामाजिक कार्यों का भार ज्यादा था। अतः सन् 1918 में उन्होनें नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। उनके साथियों व शुभचिन्तकों ने नौकरी नहीं छोड़ने की सलाह दी थी। उनके अधिकारियों ने भी पत्र लिखकर भक्त फूल सिंह को समझाया कि वो पटवार पद की नौकरी से त्याग पत्र नहीं दें। इस पर पत्र व्यवहार करते हुए भक्त फूल सिंह लिखा – आपका मेरे प्रति जो प्रेम है उसके लिए धन्यवाद। मेरे रास्ते अब बदल गए हैं। मैंने इस मार्ग को त्याग कर दूसरे मार्ग पर चलने का निश्चय किया है। इस प्रकार उन्होनें पटवारी के पद से नौकरी त्याग दी।

शैक्षणिक कार्य में योगदान

पटवारी का पद त्याग देने पर उन्होनें गहन मंथन किया। सोचा कि शिक्षा ही गांवों के बच्चों को उत्तम मार्ग प्रदान कर सकती है। एक ''आर्य नवयुवक विद्यालय'' खोलने की बात उनके मन में आई। उन्होनें अपनी मनसा स्वामी ब्रह्मानन्द के सामने व्यक्त की। स्वामी ब्रह्मानन्द ने भक्त फूल सिंह को गुरूकुल खोलने के लिए प्रेरित किया। भैंसवाल गुरूकुल की आधारशिला 1920 में स्वामी श्रद्धानन्द जी से रखवाई। यह गुरूकुल 50 बालकों से आरम्भ किया गया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही इन बालकों का वेदारम्भ कराया था। सर्वप्रथम 1932 ई. में तीन स्नातक शिक्षित होकर निकले।

हरिश्चन्द्र, विधानिधि व सत्यवीर विधा गुरूकुल भैंसवाल के प्रथम स्नातक बने थे। तीनों ब्रह्मारियों को विद्या प्रभाकर की उपाधि अलंकृत की गई थी। पूरा दीक्षांत समारोह मनाया गया था। बैंड बाजा उसके साथ सन्यासी मण्डल, भक्त फूल सिंह उनके पीछे गुरूजन तथा गुरूकुल ब्रह्मचारी चल रहे थे। इस दीक्षांत समारोह में भाषण प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चौ. छोटूराम जी ने दिया था।

कन्या गुरूकुल खानपुर कलां

नारी शिक्षा व उत्थान को मध्येनजर रखते हुए भक्त फूल सिंह ने सन् 1936 में खानपुर कलां में कन्या पाठशाला की शुरूआत की। लेकिन यह पाठशाल खानपुर कलां के जंगल में सिद्ध महात्मा की 13 बीघे जमीन में (जहां गौशाला चल रही थी) स्थाई रूप से चलाई गई। सन् 1940 में इस पाठशाला का नाम कन्या गुरूकुल खानपुर कलां रखा गया। इस पाठशाला में प्रवेश लेने वाली प्रथम तीन छात्राएं कुन्ती, गार्गी व गुणवती थी। भक्त जी घर–घर जाकर लोगों को समझाते कि वे अपनी कन्याओं को पाठशाला में भेजें।

दलितों द्वारा

भक्त फूल सिंह वट वृक्ष के नीचे समाधि में लीन बैठे थे। उनके पास मोठ गांव में रहने वाले चमार आए और उन्होंने सारी घटना का विस्तृत वर्णन भक्त फूल सिंह को सुनाया कि कैसे उनके द्वारा बनाए हुए कूएं को मिटटी से कुछ मुसलमानों ने भर दिया है। भक्त फूल सिंह मनसा राम बहवलपुर के साथ गांव मोठ में गए। यवनों के अन्य लोगों को बहुत समझाया लेकिन उनकी एक न चली। अन्त में भक्त जी ने अनशन शुरू कर दिया। भक्त जी का शरीर निर्बल होता गया। चौ. छोटूराम, चौ. माडू सिंह, छाजू राम, दादा घासीराम, चौ. टीका राम व महात्मा गांधी के कहने पर भी अनशन नहीं खोला। अन्त में चौ. छोटूराम के हस्तक्षेप से मोठ गांव में कुआं बनवाया गया। 23 दिन का अनशन भक्त फूल सिंह ने उसी कुएं का पानी पीकर खोला। अतः सभी हरिजन भाई भक्त जी को कृतज्ञता से देखते हैं। इस प्रकार दलितोंद्वार में भक्त जी ने अपना सहयोग दिया।

अगवा कन्य को छुड़वाना

जाटी कलां निवासी नेकी राम की पोती को गूगाहेड़ी के मुसलमान उठाकर ले गए। कई बार उसे लेने के प्रयास में नेकी राम असफल रहे। उन्होनें भक्त जी के पास आकर अपनी सारी व्यथा बताई। भक्त जी ने कहा तुम्हारी पोती तुम्हें मिल जाएगी व्यर्थ चिंता मत करना। भक्त फूल सिंह ने जाटी कलां के पास के गांव निदाना व फरमाना की पंचायत इकट्ठी की। कठोरता से दबाव देकर पंचायत के सामने सारी बात रखी। गूगाहेड़ी के मुसलमानों पर दबाव बनाकर अगवा बच्ची को मंगवाया गया। इस प्रकार भक्त फूल सिंह के प्रयास से बच्ची अपने परिवार को मिली।

आर्य समाज में योगदान

लोहारू में आर्य समाज उत्सव

1940 में हैदराबाद आन्दोलन सफल रहा। सत्याग्रह के बाद आर्य समाज कार्यकर्ताओं व हिन्दूओं का मनोबल काफी बढ गया था। हैदराबाद सत्याग्रह का उत्तरदायी मानते हुए हैदराबाद निजाम ने आर्य समाज के मंत्री भगवान सिंह ठाकुर को परेशान करना शुरू कर दिया। ठाकुर न पत्राचार माध्यम से भक्त जी को सारी स्थिति से अवगत करा दिया। भक्त जी ने कहा तुम उत्सव रख दो। अप्रैल 1941 में आर्य समाज का उत्सव रखा गया। उत्सव में भक्त फूल सिंह भैंसवाल गुरूकुल के भजनोपदेशक नौनंद सिंह तथा आर्य समाज प्रतिनिधि सभा की ओर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 14
November 2017

से स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, आर्य भजनोपदेशक मण्डली महाउपदेशक समर सिंह वेदालकार जी पहुंच गए। कार्यकर्ताओं ने नगर कीर्तन के रूप में जलूस निकालने को कहा। भक्त फूल सिंह ने सिर्फ उत्सव करने को कहा लेकिन कार्यकर्ताओं के हठ से जलूस निकाला गया। यह जलूस स्वतन्त्रतानन्द के नेतृत्व में निकाला गया। रियासती पुलिस ने शोभा यात्रा पर लाठी चार्ज कर दिया। अर्ध चेतन करके गंभीर रूप से भक्त जी व स्वामी स्तवन्त्रतानन्द को घायल किया गया। गंभीर रूप से घायल भक्त फूल सिंह व स्वामी स्वतन्त्रतानन्द को दिल्ली से इरविन हस्पताल में दाखिल कराकर इलाज कराया गया।

आचार्य विद्यामार्तण्ड भक्त सिंह जीवन चरित्र चतुर्थ संस्करण 1996, पृष्ठ 125–127

हैदराबाद सत्याग्रह

आर्य समाज की स्थापना हैदराबाद रियासत में 1880 में हुई थी। हैदराबाद में आर्य समाजियों के अधिकारों के लिए 1939ई. में सत्याग्रह किया गया। 1932 में चन्द्रभान उपदेशक को रियासत से निष्कासित किया गया। 1933 में रामचन्द्र देहलवी पर इस्लाम की निंदा का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया। 1934 में निजाम ने आदेश पत्र निकाला कि मन्दिर के बाहर सार्वजनिक सभाएं व हवन नहीं किए जाएगें। मुहर्रम के महीने में हिन्दु विवाह का आयोजन नहीं करें। देवी का जलूस, दशहरा व उसकी झांकी ना निकाले ''सार्वदेशिक सभा' में अपनी बैठक की और सत्याग्रह का जिम्मा नारायण स्वामी को दे दिया। इस प्रकार नारायण स्वामी के आदेशानुसार 31 जनवरी 1934 को सत्याग्रह शुरू हो गया। रोहतक के सत्याग्रहीयों का जिम्मा भक्त फूल सिंह को सौंपा गया। प्रथम जत्थे में आचार्य हरिश्चन्द्र के साथ 24 सत्याग्रही भेजे ये सभी गुरूकुल भैंसवाल के अध्यापक व छात्र थे। दूसरे जत्थे में भक्त जी के धर्म गुरूकुल भैंसवाल के पूर्व आचार्य ब्रह्मानन्द के साथ 100 सत्याग्रही व तीसरे जत्थे में चौ. न्यानन्द सिंह, जौहरी सिंह, बालमुकुन्द जी व शिवकर जी थे। चौथे जत्थे में सत्यप्रिय अध्यापक के साथ भैंसवाल गुरूकुल के स्नातक भेजे गए। यह आन्दोलन 31 जनवरी 1939 से 17 अगस्त 1939 लगभग छः महीने चला। शिवानन्द मलिक की पुस्तक देहाती गांधी के अनुसार सत्याग्रहीयों की संख्या निम्न टेबल में दर्शाई गई है–

सत्याग्रहीयों की संख्या लगभग

क्र सं.	प्रांत	संख्या
1	कश्मीर, दिल्ली पंजाब व सीमा प्रान्त	3158
2	संयुक्त प्रान्त	2085
3	मालवा राजस्थान, बिहार, बंगाल	980
4	मध्य प्रान्त व बरार	575
5	बंबई व सिंध	435
6	मद्रास	66
7	बर्मा व असम	22
8	हैदराबाद निजाम राज्य	3249
	कुल	10570

सरदार पटेल ने भी हैदराबाद रियासत विलय के बाद कहा था कि अगर आर्य समाज ने भूमिका तैयार न की होती तो हैदराबाद पुलिस की कार्यवाही तीन दिन में सफल नहीं हो सकती थी।

आचार्य डा. रणजीत सिंह मुक सेवक चौ. माडू सिंह जीवन चरित्र प्रथम संस्करण 1995, पृष्ठ 55–58

इस उपलक्ष में स्वामी नित्यानन्द भजमाला में भजन लिखा जिसके अंश इस प्रकार हैं–

इतिहास में नाम रहेगा उन्हीं का संसार में
जो धर्म खिलारी जय पाये हैदराबाद में।
दूसरा जत्था रोहतक से गया जिसमें थे 25 वीर
लड़े बलकारा जय पाये हैदराबाद में।

पानीपत में आर्य समाज का जुलूस का नेतृत्व

पानीपत के आर्य समाज को सबल माना जाता है। आर्य समाज में वार्षिक उत्सव से पहले जलूस निकाला जाता है। कुछ मुसलमानों ने विरोध करके इस पर प्रतिबंध लगवा दिया। आर्य समाज के कार्यकर्ता भक्त फूल सिंह के पास आए। भक्त जी तुरंत गुरूकुल के स्नातक, विद्यार्थियों व गांव के लोगों सहित पानीपत गए। इतना जनसमूह देखकर सरकार ने भी अपना प्रतिबंध हटा लिया और भक्त फूल सिंह के नेतृत्व में आर्य समाज का पानीपत जलूस सफल रहा।

स्वामी नित्यानन्द भजनमाला गीत हरयाणा द्वितीय भाग गीत नं. 8 प्रथम संस्करण 1998, पृष्ठ 26

रोहतक गौ रक्षा सम्मेलन

मदन मोहन मालवीय (महामना) के नेतृत्व में रोहतक में आर्य समाज ने दो दिन का गौरक्षा सम्मेलन किया। भक्त फूल सिंह जी इस सम्मेलन में स्वागताध्यक्ष थे। इस सम्मेलन में गौरक्षा जलूस भी निकाला गया। इस गौरक्षा आन्दोलन में 101 आदमी तिहाड़ जेल में गए थे। इस सम्मेलन के अग्रिम व्यक्तियों में महात्मा भक्त फूल सिंह थे। स्वामी नित्यानन्द ने औरतों को समझाया कि कैसे वो गाय के गुणगान करके उसे अपने घरों में पाले और उसकी रक्षा के भजन की पंक्तियां इस प्रकार हैं–

गाय पालूंगी जरूर चाहे जान चली जाए।
मैं गोपाल की संतान गाय पालन मेरी आन।
मान रखूंगी जरूर चाहे कष्ट कोई आए।

गौचर भूमि छुड़वाना

भक्त फूल सिंह सन् 1928 में जीन्द जिले के गांव ललित खेड़ा में चंदे के मकसद से गए थे। उन्होनें लोगों से पूछा गाय घर में बांधकर क्यों रखी है? प्रतिक्रिया में पाया कि उस गांव में गौचर भूमि नहीं है। भक्त फूल सिंह ने लोगों को गौचर भूमि छोड़ने के लिए कहा लेकिन लालचवश लोग गौचर भूमि छोड़ने को तैयार नहीं थे। अन्त में 19 दिन के अनशन लेकर भक्त फूलसिंह ने ललित खेड़ा गांव में गौचर भूमि छुड़वाई थी।

खानपुर कलां में गौशाला की स्थापना

खानपुर निवासियों ने 13 बीघे जमीन मढ़ी के नाम दे रखी थी। इसमें साधु रूपराम रहते थे। यह भूमि गांव से दूर जंगल में थी। साधु रामरूप का देहावसान लगभग 1927 में हो चुका था। भक्त फूल सिंह ने खानपुर निवासियों से बातचीत करके गौशाला का निर्माण कर लिया। इस गौशाला से भैंसवाल गुरूकुल के विद्यार्थियों के

लिए दूध (घोड़े पर रखकर) पहुंचाया जाता था। लगभग 1930 में माता धूप कौर भी गौशाला में आकर रहने लग गई थी। आज भी इस स्थान को सिद्ध बाबा की मढ़ी (मन्दिर) व गौशाला के नाम से जाना जाता है।

शुद्धि आन्दोलन

स्वामी श्रद्धानन्द ने 1923ई. में आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी। इसके अन्तर्गत गैर हिन्दूओं व अन्य धर्म में गए हुए हिन्दूओं को उनकी मर्जी से हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जाता था। अकेले संयुक्त प्राप्त से 419 गांवों के मलकाना मुस्लिम राजपूतों को (जिनकी संख्या लगभग साढे चार लाख) शुद्धि करके हिन्दू धर्म में दीक्षांत किया गया था। इस उपलक्ष में नित्यानन्द ने बड़ा सुन्दर भजन गाया था। जो निम्नलिखित है–

शुद्धि का डंका बजा दिया श्रद्धानन्द ने
सब हिन्दूओं को मूर्दा कहते, अब उनको जिन्दा बना दिया।
सब कमजोरी दूर हटा, दे दवा हाजमा बढ़ा दिया
थे मुद्दत से बिछड़े भाई, अब उनको फिर से मिला दिया।।

यह एक ऐतिहासिक घटना थी। इसी के फलस्वरूप 23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानन्द को उनके पैतृक निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक मुसलमान ने गोली मार दी। इसी आन्दोलन के फलस्वरूप लेखराम और महाशय राजपाल की भी हत्या कर दी गई।

भक्त फूल सिंह भी हरियाणा के आर्य समाज के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। शुद्धि आन्दोलन में भी उनकी सक्रियता थी। भक्त फूल सिंह व चौ. शेरसिंह मलिक ने मिलकर होडल में शुद्धि के लिए लगभग 11 दिन का अनशन किया। अतः शुद्धि करे धर्मान्तरण का कार्य हरियाणा संयुक्त प्रान्त उत्तर प्रदेश में तो जोर–शोर से किया जा रहा था जिनमें भक्त जी का नाम अग्रिण पंक्तियों में था। भक्त जी ने शुद्धि का कार्य मुख्य रूप से शुद्धि के मुख्य कार्यकर्ता चौ. पीरू सिंह जी से सीखा था।

भक्त फूल सिंह का बलिदान

खानपुर गुरूकुल के लिए दान में दी गई भूमि का दाखिल खारिज कराने (इन्तकाल चढ़वाना) के लिए भक्त फूल सिंह कन्या गुरूकुल खानपुर कलां में ठहरे हुए थे। 14 अगस्त 1942 रात्रि के लगभग 9 बजे भक्त जी तालाब के समीप वट वृक्ष के नीचे चबूतरे पर बैठे थे। वैराग्य व ज्ञान की बातों का उपदेश अभय राम व सुरत सिंह (मुहाना वाले) को दे रहे थे। भक्त फूल सिंह ने कबीर दास का दोहा गायन किया–

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सब तेरा।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मेरा।।

गायन के पांच मिनट बाद पांच हत्यारों ने प्रवेश किया। जिनके पास एक बैट्री एक बन्दूक व दो पिस्तौल थी। अपने असली रूप को छिपाने के लिए उन्होनें सैनिकों की वर्दी पहन रखी थी। उन हत्यारों ने पूरी साजिश रची थी कि वो द्वितीय विश्वयुद्ध में भगौड़े हुए सैनिकों को ढूंढते हुए आए हैं। उन्होनें भक्त जी से कहा भी कि– हमने सुना है कि तुम फौजी भगौड़ों को यहां रखते हो। सभी ने कहा कि यहां कोई फौजी भगौड़ा नहीं रहता आप पूरा विश्वास करें। एक ने बैट्री दिखाई तो लम्बी दाढ़ी से भक्त जी को पहचानकर दूसरे ने पिस्तौल से 14 अगस्त 1942 को तीन फायर लगातार कर दिए। भक्त जी ने ऊँ शब्द बोला और चबूतरे के ऊपर जिस खाट पर भक्त जी बैठे थे उसी पर उनका सिर लटक गया। अभय राम व सुरत सिंह में से एक ने कन्याओं को सूचित किया कि कुछ गुण्डों ने भक्त जी की हत्या कर दी। सारी कन्याएं जीजी गुणवती सुभाषिणी बहन जी, माता धूप कौर सब बिलखते हुए

भक्त जी के पास पहुंचे। एक आदमी ने खानपुर गांव के लोगों को सूचित किया। तुरन्त लगभग 2000 आदमी घटनास्थल पर पहुंच गए। तत्पश्चात विचाराविमर्श करके हरि सिंह के साथ चार आदमी गुरूकुल भैंसवाल कलां में भक्त जी के बलिदान की सूचना देने के लिए भेजे गए। 15 अगस्त 1942 को भक्त जी का मृत शरीर शव परीक्षा ;च्वेज डवतजमउद्ध के लिए रोहतक लाया गया। शव परीक्षा का काम पूरा होने के बाद शव को रूखी गांव तक मोटर में तथा उसके बाद शव को कंधो पर उठा कर रिवाड़ा गुरूकुल से होता हुआ भैंसवाल गुरूकुल में लाया गया। 16 अगस्त 1942 को गुरूकुल भैंसवाल कलां वैदिक रीति रिवाज से भक्त जी का अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। (जहां इनका संस्कार किया गया था वहां आज महाप्रसाद (हाल) बना हुआ है।

8 मन घी, कई मन सामग्री, चन्दन की लकड़ियों और गोले आदि इनके अन्त्येष्टि संस्कार के समय डाले गए और वैदिक मंत्रों का उच्चारण विद्यार्थियों के द्वारा किया गया। तीनों प्रकार के ऋणों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए भक्त जी ने अपने मन को मोक्ष मार्ग में लगाया। भक्त जी अपने लिए नहीं जमाने के लिए जिए। सत्य है ''सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।।''

निष्कर्ष

भक्त जी ने हरियाणा के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। सामाजिक, शैक्षणिक, गौरक्षा, नारी शिक्षा, शुद्धि आन्दोलन, आर्य समाज का प्रचार व प्रसार, वैदिक गुरूकुलों खानपुर कलां व भैंसवाल कलां की स्थापना ये सब उस समय अतुलनीय, अद्भुत व अनूठा योगदान था। उनका जीवन आने वाली हर पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन है। ईमानदारी व समर्पण का भाव कोई इनसे सीखे। सामाजिक कार्यों में प्रतिबद्धता व निष्ठा के कारण व शहीद कर दिए गए।

किसी कवि ने कहा–

मुनेरपि वनस्थस्य स्वामि कार्याणि कुर्वतः।
स्वयमेवोपजायन्ते मित्रोदासीनशत्रवः।।

उपरोक्त पंक्ति का अर्थ है– इसमें आश्चर्य ही क्या है। दुर्जन लोग अपनी दुर्जनता नहीं छोड़ता तो सज्जन अपनी सज्जनता क्यों छोड़े? जिसका जो स्वभाव होता है वह उसी के अनुसार आचरण करता है। भक्त फूल सिंह अद्भुत परिश्रमी, साहसी, त्यागी, उत्साही, उद्यमी, निर्भीक, गौरक्षक, अडिग, ऋषि भक्त, आर्य समाज में पूर्ण समर्पित व प्राचीन भारतीय सभ्यता व शिक्षा संस्कृति के प्रति आस्थावान व्यक्ति थे। निष्कर्ष तौर पर ऐसी वीर बहुमुखी अद्भुत प्रतिभा संसार में बहुत कम मिलती है। अतः उनका पूरा जीवन प्रेरणात्मक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. विद्यामार्तण्ड, वि. (2006). श्री भक्त फूल सिंह का जीवन चरित्र, *आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक,* (4) 2–3, 78, 88, 93–95, 131–138.
2. मलिक, एस. (2006). देहाती गांधी भक्त फूल सिंह जीवन वृत, *शिव लक्ष्मी विद्याधाम हिसार,* 77, 151, 232–235.
3. सिंह, आर. (1995). मुक सेवक चौ. माडू सिंह जीवन चरित्र, *नेशनल प्रिंटिंग प्रेस रोहतक,* (1) 78–79.
4. सरस्वती, एन. (1998). स्वामी नित्यानन्द भजनमाला, *आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक,* (1) 6, 20, 26.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 14
November 2017

5. शास्त्री, वी. – सिंह, आर. (2005). कर्मयोगी चौ. प्रियव्रत अभिनन्दन ग्रंथ, *अभिनन्दन समिति दयानन्द मठ रोहतक,* (1).
6. शकुन्तला, एस. – ज्ञानवती, एस. (1992). अभिनन्दन ग्रथ, *वीरेश सम्राट आर्ट ऑफ सैट प्रैस दिल्ली,* 40–41, 44–46, 55.
7. ूण्इसवहण्जीमंतलेंउंरण्वतहद्धस्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आन्दोलन.
8. ीजजचेरूध्धीपण्उण्पापचमकपंण्वतहण